# आत्मजयी में कठोपनिषद की दार्शनिक कथा का आधुनिक पुनर्पाठ : एक अध्ययन

**डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले**
सहायक अध्यापक,
हिंदी विभाग, कमला कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

**सार :**

प्रस्तुत शोध लेख में कुँवर नारायण की काव्यकृति आत्मजयी के संदर्भ में कठोपनिषद की दार्शनिक कथा के आधुनिक पुनर्पाठ का अध्ययन किया गया है। कठोपनिषद में नचिकेता और यम के संवाद के माध्यम से जीवन, मृत्यु, आत्मा तथा ब्रह्म के गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया गया है, जिसमें 'श्रेय' और 'प्रेय' के द्वंद्व के माध्यम से मानव जीवन के नैतिक एवं आध्यात्मिक मार्ग का निर्धारण होता है। वहीं 'आत्मजयी' में कुँवर नारायण ने इसी कथा को आधुनिक संदर्भों में पुनः रूपायित करते हुए उसे अस्तित्ववादी और मनोवैज्ञानिक आयाम प्रदान किया है। इस काव्य में नचिकेता एक पौराणिक पात्र न होकर आधुनिक मनुष्य का प्रतीक बन जाता है, जो जीवन के अर्थ, अस्मिता और मृत्यु के रहस्य को लेकर गहरे आंतरिक द्वंद्व से गुजरता है।

इस अध्ययन में विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि 'आत्मजयी' कठोपनिषद की कथा का मात्र पुनर्कथन नहीं, बल्कि उसका सृजनात्मक पुनर्पाठ है, जिसमें पारंपरिक आध्यात्मिक दृष्टि को आधुनिक जीवन-दृष्टि के साथ समन्वित किया गया है। इस प्रकार कुँवर नारायण ने प्राचीन दार्शनिक परंपरा को समकालीन संदर्भों में पुनः जीवित करते हुए उसे नए अर्थ और प्रासंगिकता प्रदान की है।

**भूमिका** :

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में कुँवर नारायण का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट है। वे ऐसे कवि हैं जिन्होंने परंपरा और आधुनिकता के मध्य एक सृजनात्मक सेतु स्थापित किया। उनकी काव्य-दृष्टि में भारतीय सांस्कृतिक चेतना, दार्शनिक गहराई तथा आधुनिक मनुष्य के अस्तित्वगत प्रश्नों का समन्वय मिलता है। उनकी प्रसिद्ध काव्यकृति आत्मजयी इसी समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें प्राचीन दार्शनिक आख्यान को आधुनिक संदर्भों में पुनः प्रस्तुत किया गया है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में कठोपनिषद का विशेष महत्व है। यह उपनिषद नचिकेता और यम के संवाद के माध्यम से जीवन, मृत्यु, आत्मा और ब्रह्म के गहन प्रश्नों पर विचार करता है। इसमें 'श्रेय' और 'प्रेय' के द्वंद्व के माध्यम से मनुष्य के नैतिक एवं आध्यात्मिक मार्ग का निर्धारण किया गया है। कठोपनिषद की यह कथा केवल आध्यात्मिक विमर्श तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के शाश्वत प्रश्नों को उद्‌घाटित करती है, जो हर युग में प्रासंगिक बने रहते हैं।

'आत्मजयी' में कुँवर नारायण ने इसी नचिकेता आख्यान को आधुनिक दृष्टि से पुनः व्याख्यायित किया है। यहाँ नचिकेता केवल एक पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि आधुनिक मनुष्य का प्रतीक बनकर उभरता है, जो जीवन के अर्थ, अस्तित्व और मृत्यु के प्रश्नों से जूझ रहा है। इस काव्य में दार्शनिक प्रश्नों को केवल आध्यात्मिक संदर्भ में नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक और अस्तित्ववादी संदर्भों में भी प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य 'आत्मजयी' में निहित कठोपनिषद की दार्शनिक कथा के आधुनिक पुनर्पाठ का अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार कुँवर नारायण ने प्राचीन दार्शनिक परंपरा को आधुनिक संदर्भों में रूपांतरित

करते हुए उसे नई अर्थवत्ता प्रदान की है। साथ ही यह अध्ययन यह भी विश्लेषित करता है कि 'आत्मजयी' में पारंपरिक आध्यात्मिक दृष्टि किस प्रकार आधुनिक अस्तित्ववादी दृष्टिकोण के साथ समन्वित होती है। इस प्रकार यह शोध लेख परंपरा और आधुनिकता के अंतर्संबंध को समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो न केवल साहित्यिक दृष्टि से, बल्कि दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत सार्थक सिद्ध होता है।

**साहित्य समीक्षा :**

कुँवर नारायण हिंदी साहित्य के उन प्रमुख रचनाकारों में हैं, जिनकी काव्य-दृष्टि में दार्शनिक गहराई, सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक संवेदनशीलता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उनकी काव्यकृति आत्मजयी पर विभिन्न आलोचकों और विद्वानों ने समय-समय पर विचार किया है। अधिकांश अध्ययनों में 'आत्मजयी' को एक दार्शनिक काव्य के रूप में स्वीकार किया गया है, जिसमें जीवन और मृत्यु के प्रश्नों को गहनता से प्रस्तुत किया गया है। कुछ विद्वानों ने 'आत्मजयी' को अस्तित्ववादी चेतना से जोड़ते हुए यह प्रतिपादित किया है कि इस काव्य में आधुनिक मनुष्य के आंतरिक द्वंद्व, अस्मिता की खोज तथा जीवन के अर्थ की जिज्ञासा प्रमुख रूप से व्यक्त हुई है। इस संदर्भ में नचिकेता के चरित्र को एक प्रतीकात्मक रूप में देखा गया है, जो केवल पौराणिक पात्र न होकर आधुनिक मानव-चेतना का प्रतिनिधि बन जाता है। दूसरी ओर, कठोपनिषद पर भी व्यापक रूप से दार्शनिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन किया गया है। उपनिषदों के अध्ययन में यह स्थापित किया गया है कि कठोपनिषद जीवन, मृत्यु, आत्मा और ब्रह्म के प्रश्नों का अत्यंत गूढ़ और गंभीर विवेचन प्रस्तुत करता है। नचिकेता और यम के संवाद के माध्यम से 'श्रेय' और 'प्रेय' के सिद्धांत को स्पष्ट किया गया है, जो भारतीय दार्शनिक परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यद्यपि 'आत्मजयी' और कठोपनिषद दोनों पर स्वतंत्र रूप से अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, तथापि इन दोनों के अंतर्संबंधों का समग्र और तुलनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम हुआ है। कुछ आलोचनात्मक लेखों में यह संकेत अवश्य मिलता है कि 'आत्मजयी' कठोपनिषद से प्रेरित है, किंतु उसमें निहित दार्शनिक पुनर्पाठ और उसके आधुनिक संदर्भों का विस्तृत विश्लेषण प्रायः अनुपस्थित है।

इसी शोध-अंतराल को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन 'आत्मजयी' में कठोपनिषद की दार्शनिक कथा के आधुनिक पुनर्पाठ का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल दोनों ग्रंथों के बीच समानताओं और भिन्नताओं को रेखांकित करेगा, बल्कि यह भी स्पष्ट करेगा कि किस प्रकार कुँवर नारायण ने प्राचीन दार्शनिक परंपरा को आधुनिक जीवन-दृष्टि के साथ समन्वित करते हुए उसे नई अर्थवत्ता प्रदान की है।

**अनुसंधान पद्धति :**

1. गुणात्मक अनुसंधान पद्धति

इस शोध में गुणात्मक पद्धति का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि इसका उद्देश्य किसी तथ्य का मात्रात्मक मापन करना नहीं, बल्कि दार्शनिक एवं साहित्यिक अर्थों की व्याख्या करना है। आत्मजयी और कठोपनिषद दोनों ही ऐसे ग्रंथ हैं जिनमें विचार, प्रतीक और दार्शनिक संकेत प्रमुख हैं। अतः इनकी समझ के लिए गहन व्याख्यात्मक और चिंतनपरक दृष्टिकोण आवश्यक है। इस पद्धति के माध्यम से जीवन, मृत्यु, आत्मा और अस्तित्व जैसे अमूर्त विषयों को समझने का प्रयास किया गया है।

 ISSN-3049-415X

2. ग्रंथ-आधारित अध्ययन

यह शोध पूर्णतः ग्रंथ-आधारित है, जिसमें प्राथमिक स्रोत के रूप में कठोपनिषद और 'आत्मजयी' का अध्ययन किया गया है। इन दोनों ग्रंथों के मूल पाठ, संरचना, कथानक और दार्शनिक तत्त्वों का सूक्ष्म अवलोकन किया गया है। विशेष रूप से नचिकेता की कथा, यम के उपदेश तथा 'आत्मजयी' में प्रस्तुत आत्मसंवाद को केंद्र में रखते हुए अध्ययन किया गया है। इस पद्धति से यह सुनिश्चित किया गया है कि निष्कर्ष प्रत्यक्ष ग्रंथीय साक्ष्यों पर आधारित हों।

3. विश्लेषणात्मक पद्धति

विश्लेषणात्मक पद्धति के अंतर्गत कठोपनिषद के प्रमुख दार्शनिक तत्त्वों—जैसे आत्मा की अमरता, मृत्यु का रहस्य, ब्रह्मज्ञान तथा 'श्रेय' और 'प्रेय' के सिद्धांत—का गहन विश्लेषण किया गया है। इसके पश्चात 'आत्मजयी' में इन तत्त्वों के रूपांतरण को समझने का प्रयास किया गया है। इस प्रक्रिया में यह देखा गया है कि किस प्रकार पारंपरिक दार्शनिक विचार आधुनिक संदर्भों में नए अर्थ ग्रहण करते हैं।

4. तुलनात्मक पद्धति

तुलनात्मक पद्धति इस शोध का एक महत्वपूर्ण आधार है। इसके अंतर्गत कठोपनिषद और 'आत्मजयी' के बीच समानताओं और भिन्नताओं का अध्ययन किया गया है। उदाहरणतः - जहाँ कठोपनिषद में नचिकेता और यम का स्पष्ट संवाद है, वहीं 'आत्मजयी' में यह संवाद आंतरिक मनोवैज्ञानिक संघर्ष के रूप में रूपांतरित हो जाता है। इस तुलना के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि आधुनिक पुनर्पाठ किस प्रकार मूल कथा से भिन्न होते हुए भी उससे जुड़ा रहता है।

5. व्याख्यात्मक पद्धति

व्याख्यात्मक पद्धति के माध्यम से काव्य में प्रयुक्त प्रतीकों, बिंबों और दार्शनिक संकेतों का अर्थ स्पष्ट किया गया है। 'आत्मजयी' में नचिकेता का चरित्र एक प्रतीक के रूप में उभरता है, जो आधुनिक मनुष्य की जिज्ञासा, द्वंद्व और आत्म-खोज का प्रतिनिधित्व करता है। इसी प्रकार मृत्यु, आत्मा और अस्तित्व से जुड़े संकेतों को गहरे स्तर पर समझने के लिए व्याख्यात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है।

6. द्वितीयक स्रोतों का उपयोग

इस अध्ययन में विभिन्न आलोचनात्मक ग्रंथों, शोध-पत्रों और साहित्यिक समीक्षाओं का सहारा लिया गया है, जिससे शोध को सैद्धांतिक आधार प्राप्त हुआ है। द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से पूर्ववर्ती अध्ययनों की जानकारी प्राप्त कर यह समझा गया है कि इस विषय पर अब तक क्या कार्य हुआ है और कहाँ शोध की संभावनाएँ शेष हैं। इससे शोध की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता में वृद्धि हुई है।

7. उद्देश्यात्मक दृष्टिकोण

इस शोध का उद्देश्य स्पष्ट रूप से 'आत्मजयी' में कठोपनिषद की दार्शनिक कथा के आधुनिक पुनर्पाठ को समझना है। इसी लक्ष्य को केंद्र में रखते हुए समस्त अध्ययन को संचालित किया गया है। इस दृष्टिकोण ने शोध को एक दिशा प्रदान की है, जिससे विश्लेषण बिखरने के बजाय एक संगठित रूप में प्रस्तुत हो सका है।

इन सभी पद्धतियों के समन्वित प्रयोग से यह सुनिश्चित किया गया है कि अध्ययन न केवल गहन और विश्लेषणात्मक हो, बल्कि तार्किक, प्रमाणिक और अकादमिक दृष्टि से सुसंगत भी हो।

## कठोपनिषद का दार्शनिक स्वरूप

कठोपनिषद भारतीय दार्शनिक परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें नचिकेता और यम के संवाद के माध्यम से जीवन, मृत्यु, आत्मा और ब्रह्म जैसे गूढ़ प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया गया है। यह केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानव जीवन के शाश्वत सत्य की खोज का दार्शनिक दस्तावेज़ है। *"कठोपनिषद भारतीय दार्शनिक परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें नचिकेता और यम के संवाद के माध्यम से जीवन, मृत्यु, आत्मा और ब्रह्म जैसे गूढ़ प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया गया है।"*[1] नचिकेता की जिज्ञासा इस ग्रंथ का मूल केंद्र है। वह मृत्यु के बाद आत्मा के अस्तित्व के प्रश्न को लेकर यम के समक्ष उपस्थित होता है। यम प्रारंभ में उसे भौतिक सुख-सुविधाओं (प्रेय) का लोभ देते हैं, किंतु नचिकेता उन्हें अस्वीकार कर 'श्रेय' अर्थात् सत्य और आत्मज्ञान के मार्ग को चुनता है। इस प्रकार कठोपनिषद यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य के सामने दो मार्ग होते हैं -

- **प्रेय** : इंद्रिय सुख, क्षणिक आनंद
- **श्रेय** : आत्मज्ञान, सत्य और मोक्ष

इस सिद्धांत का वर्णन कठोपनिषद के *प्रथम अध्याय, द्वितीय वल्ली, श्लोक 1–2* में मिलता है, जहाँ श्रेय और प्रेय के बीच स्पष्ट भेद स्थापित किया गया है।

दार्शनिक दृष्टि से यह ग्रंथ आत्मा की अमरता को स्थापित करता है। आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है; वह शाश्वत और अविनाशी है। यह विचार *प्रथम अध्याय, द्वितीय वल्ली, श्लोक 18–19* में प्रतिपादित है, जहाँ आत्मा की नित्य और अविकारिता का वर्णन किया गया है। इस प्रकार कठोपनिषद मनुष्य को बाह्य संसार से हटाकर आत्मबोध की ओर अग्रसर करता है तथा उसे सत्य, ज्ञान और मोक्ष के मार्ग का बोध कराता है।

## आत्मजयी में कठोपनिषद की कथा का पुनर्पाठ

'आत्मजयी' में कुँवर नारायण ने कठोपनिषद की नचिकेता कथा को आधुनिक संदर्भों में पुनः प्रस्तुत किया है। यहाँ कथा का मूल ढाँचा वही रहता है, किंतु उसका अर्थ और प्रस्तुति बदल जाती है। *"'आत्मजयी' में कुँवर नारायण ने कठोपनिषद की नचिकेता कथा को आधुनिक संदर्भों में पुनः प्रस्तुत किया है। यहाँ कथा का मूल ढाँचा वही रहता है, किंतु उसका अर्थ और प्रस्तुति बदल जाती है।"*[2] इस काव्य में नचिकेता एक पौराणिक पात्र न होकर आधुनिक मनुष्य का प्रतीक बन जाता है। वह केवल मृत्यु के रहस्य को जानने वाला जिज्ञासु नहीं, बल्कि जीवन के अर्थ, अस्मिता और अस्तित्व के संकट से जूझने वाला व्यक्ति है। यह रूपांतरण इस बात को स्पष्ट करता है कि कवि ने पारंपरिक कथा को आधुनिक मनोवैज्ञानिक और अस्तित्ववादी संदर्भों में रूपांतरित किया है।

जहाँ कठोपनिषद में नचिकेता को यम से स्पष्ट और अंतिम उत्तर प्राप्त होते हैं, वहीं 'आत्मजयी' में उत्तर निश्चित नहीं हैं। यहाँ प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। नचिकेता का संघर्ष बाहरी न होकर आंतरिक है। वह स्वयं से संवाद करता है और अपने अस्तित्व के अर्थ को समझने का प्रयास करता है। यह आत्मसंवाद आधुनिक मनुष्य की मानसिक और दार्शनिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार 'आत्मजयी' में कथा का पुनर्पाठ केवल कथानक का पुनरावर्तन नहीं, बल्कि उसका सृजनात्मक और आधुनिक पुनर्सृजन है, जिसमें प्राचीन दार्शनिक परंपरा को समकालीन जीवन-दृष्टि के साथ जोड़ा गया है।

## दार्शनिक तत्त्वों की तुलना

### (क) आत्मा और अस्तित्व

कठोपनिषद में आत्मा को शाश्वत, अविनाशी और अपरिवर्तनशील माना गया है *"न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।"*[3] यहाँ आत्मा का स्वरूप पूर्णतः निश्चित है। यह न जन्म लेती है, न मरती है; अतः मनुष्य को आत्मा के ज्ञान के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग बताया गया है। इसके विपरीत आत्मजयी में आत्मा का प्रश्न एक खोज के रूप में प्रस्तुत होता है - *"क्या मैं वही हूँ जो कल था? या वह जो मृत्यु के मुँह में गिरकर नया जन्म लेगा?"*[4] यहाँ आत्मा निश्चित सत्य नहीं है, बल्कि एक प्रश्न है। आधुनिक मनुष्य अपनी पहचान और अस्तित्व को लेकर संशय में है।

### (ख) मृत्यु का स्वरूप

कठोपनिषद में मृत्यु को एक सामान्य प्रक्रिया और ज्ञान का माध्यम माना गया है - *"यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनः, मृत्युर्यस्योपसेचनम्..."*[5] यहाँ मृत्यु भय का विषय नहीं, बल्कि एक परिवर्तन है। यम ज्ञानदाता हैं, इसलिए मृत्यु का रहस्य स्पष्ट हो जाता है। जबकि 'आत्मजयी' में मृत्यु एक अस्तित्वगत संकट के रूप में सामने आती है- *"मृत्यु! क्या वह केवल एक अंत है या एक अंतहीन जिज्ञासा की शुरुआत?"*[6] यहाँ मृत्यु एक अनुत्तरित प्रश्न है। आधुनिक मनुष्य मृत्यु को समझ नहीं पाता—वह उससे डरता भी है और आकर्षित भी होता है।

### (ग) श्रेय और प्रेय

कठोपनिषद में 'श्रेय' और 'प्रेय' का स्पष्ट भेद किया गया है - *"अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः।"*[7] श्रेय (सत्य, आत्मज्ञान) को श्रेष्ठ और प्रेय (भौतिक सुख) को निम्न माना गया है। मनुष्य को श्रेय का मार्ग चुनना चाहिए। जबकि 'आत्मजयी' में यह द्वंद्व जटिल हो जाता है - *"मुझे वे गायें नहीं चाहिए जो बूढ़ीहो चुकी हैं, मुझे वह सत्य चाहिए जो अभी तक जन्मा नहीं।"*[8] प्रेय का त्याग तो है, लेकिन श्रेय भी स्पष्ट नहीं है, वह एक अनिश्चित खोज है।

### 4. नचिकेता का रूपांतरण

कठोपनिषद में नचिकेता का चरित्र भारतीय दार्शनिक परंपरा में एक आदर्श जिज्ञासु के रूप में स्थापित है, जो सत्य की प्राप्ति के लिए पूर्णतः समर्पित, धैर्यवान और नैतिक दृढ़ता से युक्त है। वह अपने पिता के यज्ञीय आचरण पर प्रश्न उठाकर सत्य की खोज के लिए स्वयं मृत्यु के पास जाने का साहस करता है और यम के समक्ष भी किसी प्रकार के प्रलोभन से विचलित नहीं होता। यम द्वारा दिए गए भौतिक सुखों (प्रेय) को अस्वीकार कर वह आत्मज्ञान (श्रेय) को चुनता है- *"अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयः..."*[9] । यह प्रसंग उसे एक आदर्श साधक के रूप में स्थापित करता है, जिसकी जिज्ञासा स्थिर, लक्ष्य- निश्चित और अंततः समाधान प्राप्त करने वाली है। उपनिषद में नचिकेता का संवाद बाह्य है और उसका परिणाम निश्चित ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के रूप में सामने आता है, जिससे जीवन और मृत्यु के प्रश्नों का अंतिम समाधान प्राप्त हो जाता है।

इसके विपरीत आत्मजयी में कुँवर नारायण ने नचिकेता के चरित्र को आधुनिक संदर्भों में रूपांतरित करते हुए उसे एक संघर्षशील, प्रश्नाकुल और द्वंद्वग्रस्त व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। यहाँ नचिकेता केवल सत्य का खोजी नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व, अस्मिता और जीवन के अर्थ को लेकर निरंतर आत्मसंवाद करने वाला आधुनिक

मनुष्य बन जाता है- *"मेरी व्याकुलता एक नया अर्थ पाना चाहती है, मैं पिता के नहीं, युग के संकट का उत्तर ढूँढ रहा हूँ।"*[10] इस काव्य में संवाद बाहरी न होकर आंतरिक हो जाता है, जहाँ नचिकेता स्वयं से प्रश्न करता है -*"क्या मैं वही हूँ जो कल था?..."*[11] और किसी निश्चित उत्तर तक नहीं पहुँचता। इसप्रकार उसका चरित्र एक सार्वभौमिक प्रतीक में विकसित होता है, जो आधुनिक मनुष्य की अस्तित्वगत अनिश्चितता, मानसिक द्वंद्व और सत्य की निरंतर खोज को अभिव्यक्त करता है; जैसा कि आलोचक पुष्पपाल सिंह भी संकेत करते हैं कि पारंपरिक नचिकेता समाधान का प्रतीक है, जबकि 'आत्मजयी' का नचिकेता प्रश्नों में उलझा आधुनिक बौद्धिक है।

**आधुनिक पुनर्पाठ की विशेषताएँ :**

**(क) आध्यात्मिक प्रश्न - अस्तित्ववादी प्रश्न**

कठोपनिषद में जीवन, मृत्यु और आत्मा से जुड़े प्रश्न मुख्यतः आध्यात्मिक हैं, जिनका उद्देश्य आत्मज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति है। यहाँ नचिकेता के प्रश्नों का अंतिम समाधान यम के उपदेश के माध्यम से प्राप्त हो जाता है। इसके विपरीत आत्मजयी में यही प्रश्न अस्तित्ववादी रूप धारण कर लेते हैं। यहाँ प्रश्न केवल आत्मा के स्वरूप तक सीमित नहीं रहते, बल्कि मनुष्य के अस्तित्व, पहचान और जीवन के अर्थ से जुड़ जाते हैं-*"क्या मैं वही हूँ जो कल था?"*[12] यह परिवर्तन दर्शाता है कि आधुनिक युग में मनुष्य आध्यात्मिक समाधान से अधिक अस्तित्वगत संकट से जूझ रहा है, जहाँ प्रश्नों का उत्तर निश्चित नहीं है।

**(ख) बाहरी संवाद - आंतरिक आत्मसंवाद**

कठोपनिषद में नचिकेता और यम के बीच स्पष्ट बाह्य संवाद होता है, जिसमें गुरु-शिष्य परंपरा के अनुसार ज्ञान का आदान-प्रदान होता है। यह संवाद वस्तुनिष्ठ है और सत्य को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करता है। इसके विपरीत 'आत्मजयी' में यह संवाद आंतरिक हो जाता है, जहाँ नचिकेता स्वयं से प्रश्न करता है और आत्मसंवाद के माध्यम से अपने अस्तित्व को समझने का प्रयास करता है - *"मेरी व्याकुलता एक नया अर्थ पाना चाहती है..."*[13] यह परिवर्तन आधुनिक मनुष्य की उस स्थिति को दर्शाता है, जहाँ बाहरी मार्गदर्शन के स्थान पर वह स्वयं अपने भीतर उत्तर खोजने के लिए बाध्य होता है।

**(ग) निश्चित उत्तर - अनिश्चित खोज**

कठोपनिषद में जीवन और मृत्यु से संबंधित प्रश्नों के स्पष्ट और अंतिम उत्तर दिए गए हैं। यम के उपदेश के माध्यम से नचिकेता को ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है, जिससे उसकी जिज्ञासा समाप्त हो जाती है। इसके विपरीत 'आत्मजयी' में कोई निश्चित उत्तर नहीं मिलता, बल्कि प्रश्नों की निरंतरता बनी रहती है- *"मृत्यु! क्या वह केवल एक अंत है या एक अंतहीन जिज्ञासा की शुरुआत?"*[14] यहाँ ज्ञान एक स्थिर उपलब्धि नहीं, बल्कि एक निरंतर प्रक्रिया बन जाता है। आधुनिक मनुष्य के लिए सत्य कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं, बल्कि सतत खोज है।

**(घ) शांति, द्वंद्व और संघर्ष**

कठोपनिषद में ज्ञान प्राप्ति के बाद नचिकेता को मानसिक शांति और स्थिरता प्राप्त होती है। वहाँ जीवन का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है और द्वंद्व समाप्त हो जाता है। इसके विपरीत 'आत्मजयी' में नचिकेता निरंतर द्वंद्व और संघर्ष की स्थिति में रहता है। उसका मन स्थिर नहीं, बल्कि प्रश्नों और संदेहों से भरा हुआ है- *"मैं युग के संकट का उत्तर*

*ढूँढ रहा हूँ।"* [15] यह आधुनिक जीवन की जटिलताओं और अस्थिरता को दर्शाता है, जहाँ शांति के स्थान पर संघर्ष और असंतुलन प्रमुख हो जाते हैं।

**निष्कर्ष :**

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि कुँवर नारायण की काव्यकृति आत्मजयी केवल कठोपनिषद की कथा का पुनर्कथन नहीं है, बल्कि उसका एक गहन और सृजनात्मक आधुनिक पुनर्पाठ है। कठोपनिषद में नचिकेता और यम के संवाद के माध्यम से जीवन, मृत्यु और आत्मा से संबंधित प्रश्नों का स्पष्ट और आध्यात्मिक समाधान प्रस्तुत किया गया है, जहाँ सत्य एक निश्चित और प्राप्त होने योग्य तत्व के रूप में सामने आता है। इसके विपरीत 'आत्मजयी' में यही प्रश्न आधुनिक संदर्भों में पुनः व्याख्यायित होकर अस्तित्ववादी और मनोवैज्ञानिक आयाम ग्रहण कर लेते हैं।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि 'आत्मजयी' में नचिकेता का चरित्र एक महत्वपूर्ण रूपांतरण से गुजरता है। वह पारंपरिक आदर्श साधक के स्थान पर एक ऐसे आधुनिक मनुष्य का प्रतीक बन जाता है, जो अपने अस्तित्व, अस्मिता और जीवन के अर्थ को लेकर निरंतर संघर्षरत है। यहाँ बाहरी संवाद के स्थान पर आंतरिक आत्मसंवाद प्रमुख हो जाता है, तथा निश्चित उत्तरों के स्थान पर प्रश्नों की निरंतरता बनी रहती है। इस प्रकार कुँवर नारायण ने न केवल कठोपनिषद की दार्शनिक परंपरा को पुनर्जीवित किया है, बल्कि उसे आधुनिक जीवन की जटिलताओं और चुनौतियों के साथ जोड़कर नई प्रासंगिकता प्रदान की है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'आत्मजयी' प्राचीन और आधुनिक के बीच एक सृजनात्मक सेतु का कार्य करती है, जहाँ भारतीय दार्शनिक परंपरा आधुनिक चेतना के साथ समन्वित होकर नए अर्थों में अभिव्यक्त होती है। यह काव्य न केवल दार्शनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि आधुनिक मनुष्य के अस्तित्वगत संकट को समझने की दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है।

**संदर्भ** :


1. कठोपनिषद (कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा), मूल परंपरा: महर्षि कठ (कठ शाखा) , गीता प्रेस, गोरखपुर, गीता प्रेस, पो. गीताप्रेस, गोरखपुर – 273005, उत्तर प्रदेश , संवत 2080
2. कुँवर नारायण , आत्मजयी (प्रबंध काव्य) ,प्रथम प्रकाशन: भारतीय ज्ञानपीठ, 1965 भारतीय ज्ञानपीठ, 18, संस्थान मार्ग, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003
3. कठोपनिषद (कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा), मूल परंपरा: महर्षि कठ (कठ शाखा) , गीता प्रेस, गोरखपुर, गीता प्रेस, पो. गीताप्रेस, गोरखपुर – 273005, उत्तर प्रदेश , संवत 2080, 1.2.18
4. कुँवर नारायण , आत्मजयी (प्रबंध काव्य) ,प्रथम प्रकाशन: भारतीय ज्ञानपीठ, 1965 भारतीय ज्ञानपीठ, 18, संस्थान मार्ग, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, पृ .42
5. कठोपनिषद (कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा), मूल परंपरा: महर्षि कठ (कठ शाखा) , गीता प्रेस, गोरखपुर, गीता प्रेस, पो. गीताप्रेस, गोरखपुर – 273005, उत्तर प्रदेश , संवत 2080, 1.2.25
6. कुँवर नारायण , आत्मजयी (प्रबंध काव्य) ,प्रथम प्रकाशन: भारतीय ज्ञानपीठ, 1965 भारतीय ज्ञानपीठ, 18, संस्थान मार्ग, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, पृ .118

7. कठोपनिषद (कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा), मूल परंपरा: महर्षि कठ (कठ शाखा) , गीता प्रेस, गोरखपुर, गीता प्रेस, पो. गीताप्रेस, गोरखपुर – 273005, उत्तर प्रदेश , संवत 2080, 1.2.1
8. (आत्मजयी, 'वाजश्रवा का दान', पृ .35) पृ .23
9. कठोपनिषद (कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा), मूल परंपरा: महर्षि कठ (कठ शाखा) , गीता प्रेस, गोरखपुर, गीता प्रेस, पो. गीताप्रेस, गोरखपुर – 273005, उत्तर प्रदेश , संवत 2080 , 1.2.1
10. कुँवर नारायण , आत्मजयी (प्रबंध काव्य) ,प्रथम प्रकाशन: भारतीय ज्ञानपीठ, 1965 भारतीय ज्ञानपीठ, 18, संस्थान मार्ग, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, भूमिका, पृ .14
11. कुँवर नारायण , आत्मजयी (प्रबंध काव्य) ,प्रथम प्रकाशन: भारतीय ज्ञानपीठ, 1965 भारतीय ज्ञानपीठ, 18, संस्थान मार्ग, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, पृ .14
12. कुँवर नारायण , आत्मजयी (प्रबंध काव्य) ,प्रथम प्रकाशन: भारतीय ज्ञानपीठ, 1965 भारतीय ज्ञानपीठ, 18, संस्थान मार्ग, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, पृ .30
13. कुँवर नारायण , आत्मजयी (प्रबंध काव्य) ,प्रथम प्रकाशन: भारतीय ज्ञानपीठ, 1965 भारतीय ज्ञानपीठ, 18, संस्थान मार्ग, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, पृ .14
14. कुँवर नारायण , आत्मजयी (प्रबंध काव्य) ,प्रथम प्रकाशन: भारतीय ज्ञानपीठ, 1965 भारतीय ज्ञानपीठ, 18, संस्थान मार्ग, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, पृ .118
15. कुँवर नारायण , आत्मजयी (प्रबंध काव्य) ,प्रथम प्रकाशन: भारतीय ज्ञानपीठ, 1965 भारतीय ज्ञानपीठ, 18, संस्थान मार्ग, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, पृ . 105

❑❑❑

 ISSN-3049-415X